5

अशोक का रतनपुरवा से प्राप्त नवीन अभिलेख

प्रो० किरण कुमार थपल्याल

चन्द्रगुप्त मौर्य के पौत्र तथा बिन्दुसार के पुत्र अशोक (लगभग 270-232 ई.पू.) की गिनती विश्व के सबसे प्रतापी राजाओं में की जाती है। उन्हें विशाल साम्राज्य विरासत में मिला। यह साम्राज्य अफगानिस्तान से बंगाल तक, हिमालय से कर्नाटक तक विस्तृत था। उनके अभिलेखों से उनके मिस्र, सीरिया, मेसीडोन इत्यादि के ग्रीक राजाओं और श्रीलंका के राज्य के साथ घनिष्ठ संबंध की जानकारी मिलती है। उनके लेख क्षेत्रीय भाषा और लिपि के अनुरूप ब्राह्मी अथवा खरोष्ठी लिपि में, ग्रीक भाषा तथा ग्रीक लिपि में, अरामाइक भाषा तथा अरामाइक लिपि में मिलते हैं। उनके विभिन्न लेख उनके साम्राज्य के विभिन्न स्थलों में शिलाओं, शिलाखण्डों, स्तंभों और गुहाओं में मिलते हैं। इनमें से अधिकांश लेखों में अशोक ने प्रजाहित के कार्य और उनकी मौलिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिए किए गये प्रयासों का विवरण दिया है। अशोक की महानता मुख्य रूप से उसके धर्म के कारण है जिसकी परिभाषा स्वयं उन्होंने दया, दान, सत्य और पवित्रता के रूप में की है। वह सभी धर्मों का आदर करते थे और सर्व धर्म समभाव में विश्वास करते थे। वह स्वयं बौद्ध थे किन्तु उन्होंने अपने धर्म को प्रजा पर नहीं थोपा। उन्होंने कलिंग पर विजय प्राप्त की। इस युद्ध में नरसंहार से वे इतने दुःखी हुए कि उन्होंने भविष्य में विजय न करने की घोषणा की और बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए।

I

रतनपुरवा ग्राम (जिला भभुआ, बिहार) से एक अप्रकाशित लेख का छायाचित्र रामनगर (वाराणसी) के श्री विनय तथा श्री वीरेन्द्र ने डॉ. नीरज पाण्डेय के माध्यम से 11 जनवरी 2009 को मुझ तक पहुंचाया। मैंने डॉ. नीरज पाण्डेय के सहयोग से उसके अधिकांश भाग का उद्वाचन किया और जो अक्षर अस्पष्ट थे, उनका डॉ. पाण्डेय तथा श्री सम्राट चक्रवर्ती द्वारा[1] घुरहूपुर वासी लोगों की सहायता से, स्थल पर जाकर छायाचित्र खिंचवाया (चित्र 1)। छायाचित्रों को मैंने डॉ. पाण्डेय तथा चन्द्रनील शर्मा की सहायता से उद्वाचित किया। 15 जनवरी 2009 को ज्ञान-प्रवाह में प्रेस कान्फ्रेन्स में मीडिया को इसकी जानकारी भी दी गई। तत्पश्चात् 7 फरवरी, 2009 को मेरे द्वारा सम्पादित इस लेख को ज्ञान-प्रवाह ने एक मोनोग्राफ के रूप में प्रकाशित किया।[2]

मुगलसराय के पास चकिया होते हुए घुरहूपुर ग्राम की पाठशाला से कुछ दूर कठिन चढ़ाई के बाद लेख स्थल पहुंचा जा सकता है। लेख कैमूर पर्वत श्रेणी की अनेक गुफाओं में से एक गुफा के बाहरी हिस्से के पास सतह से आदमी के कद से किंचित ऊपर छेनी से चट्टान को समतल कर उकेरा गया है। नीचे सतह पर प्राकृतिक शिला का फर्श है और लेख के ऊपर कुछ ऊंचाई पर प्रक्षेपण है जिससे लेख और फर्श से लगा कुछ भाग धूप और वर्षा से सुरक्षित रहा। गुफा की दीवारों के चित्रों, अशोक के लेख तथा गुप्तकालीन बौद्ध मूर्तियों से स्पष्ट है कि यह गुफा प्रागैतिहासिक काल से गुप्तकाल तक समय-समय पर आवासित रही है।

अशोक के अधिकांश लेख ऐसे स्थलों पर हैं जहां पर अधिक से अधिक लोग उन्हें पढ़ या सुन सकते थे।

प्राचीनकाल में शिक्षा-पद्धति मुख्यतया मौखिक होने से पढ़ने-लिखने वालों की संख्या अधिक नहीं थी। प्रतीत होता हैं कि अशोक के लेख पढ़े कम और सुने अधिक जाते रहे होंगे। अपने एक लेख में[3] अशोक निर्दिष्ट करता है कि यदि एक भी व्यक्ति उसे सुनना चाहे तो लेख का उद्‌वाचन अवश्य करना चाहिए। किन्तु यह लेख बौद्ध धर्म से संबंधित है और बौद्धों के लिए जनकोलाहल से दूर बौद्ध विहारों में लिखवाये गये थे।

II

रतनपुरवा लेख की लिपि अशोक कालीन ब्राह्मी है, और भाषा मागधी प्राकृत है जिसकी सबसे बड़ी विशेषता है **र** के स्थान पर **ल** का प्रयोग, अनुनासिक के रूप में **ङ** और **ण** का अभाव और केवल **न** का प्रयोग, पुल्लिंग और नपुंसक लिंग की कर्ताकारक के अन्त में **अ** के स्थान पर **ए**।[4] अशोक के कई लेखों की भाँति इसमें भी उसे **देवानं पिय** (देवताओं का प्रिय) कहा गया है।[5] उल्लेखनीय है कि इस राजा का नाम 'अशोक' केवल मास्की, गुर्ज्जरा, निट्‌टूर और उद्देगोलम से प्राप्त लघु शिलालेखों से मिलता है।[6] जब तक यह लेख नहीं मिले थे उनके अशोक के लेख होने की संभावना तो थी किन्तु निश्चित नहीं था। और एक विद्वान ने इन्हें श्रीलंका के शासक देवानंपिय तिस्स के लेख बताया है।

III

इस अभिलेख में अशोक कहता है कि ढाई साल से अधिक समय पहले वह बौद्ध उपासक बना, एक साल लगभग निष्क्रिय रहने के पश्चात संघ से संबंध बनाया और धर्म प्रचार में सक्रिय हुआ। फलस्वरूप लोग इतने पवित्र हुए कि वे देवताओं से मिलने लगे। उसके अनुसार छोटे तथा बड़े सभी तरह के लोग पराक्रम से स्वर्ग पा सकते हैं। इस लेख को लिखाते समय उसे दौरे पर 256 दिन हो गये थे। उसने इच्छा व्यक्त की कि इस लेख को स्तम्भों और शिलाओं पर लिखवाया जाय (अभी तक स्तंभ पर इस तरह का कोई लेख नहीं मिला है)।

IV

अशोक ने कलिंग युद्ध की विभीषिका से त्रस्त होकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया। राज्याभिषेक के दसवें वर्ष उसने बुद्ध की ज्ञान-स्थली बोधगया की यात्रा की।[7] विभिन्न लघु शिलालेखों की प्रतियों में संघ के संदर्भ में **यात, उपयात, उपगत** तथा **उपेत** शब्दों का विभिन्न विद्वानों ने संघ से भेंट करना, अशोक का उपासक रहते हुए संघ में रहना तथा अशोक का भिक्षु होना माना है। चूंकि इस सन्दर्भ में डेढ़ साल की बात कही गयी है। इतने समय तक भेंट की बात असंगत लगती है। इतने समय तक राजा का राजकाज छोड़कर संघ में रहना भी कठिन लगता है।[8] इस लेख में अशोक वर्तमान काल का प्रयोग कर कहता है कि "मैं उपासक हूँ" जिससे स्पष्ट है कि वह उस समय भिक्षु नहीं था।

रतनपुरवा लेख में अशोक कहता है कि जम्बुद्वीप[9] (भारतवर्ष) में जो लोग देवताओं से नहीं मिले थे उन्हें उनसे मिला दिया गया। हर प्रसाद शास्त्री ने इसका अर्थ यह किया कि ब्राह्मण जिन्हें झूठा नहीं माना जाता था उन्हें झूठा बना दिया।[10] टॉमस के अनुसार जनजातियों को ब्राह्मण धर्म के देवताओं से परिचित करा दिया गया।[11] सिल्वां लेवी और फिलिओजा के अनुसार जो लोग देव अर्थात् राजा से नहीं मिल पाये थे वे (राजा के दौरे पर निकलने से) उससे मिलने लगे।[12] हुल्ट्‌श के अनुसार चतुर्थ शिलालेख में जो दिव्य रूपों के प्रदर्शन की बात कही गयी है उन्हीं

से मिलने से तात्पर्य है।[13] किन्तु सर्वाधिक समीचीन भाण्डारकर का मत है जिसके अनुसार अशोक के धर्मप्रचार से लोग इतने पवित्र हो गये कि वह लोग देवताओं से मिलने लगे।[14] उन्होंने अधिक साहित्यिक साक्ष्यों से स्पष्ट किया है कि प्राचीन काल में ऐसी धारणा थी कि पवित्र लोगों से मिलने देवता लोग पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। इस मत की पुष्टि जसवन्त सिंह ने भी की है।[15]

V

लघु शिलालेख की अन्य प्रतियों की भांति रतनपुरवा प्रति में भी 256 की संख्या दी गयी है। सहसराम तथा रतनपुरवा ही एकमात्र प्रतियां हैं जिनमें यह संख्या अंकों तथा शब्दों में दी गयी है। अन्यत्र या तो केवल अंकों में है या नहीं है। कुछ लोग इसे बुद्ध निर्वाण से संदर्भित तिथि मानते हैं।[16] अशोक और उसके पौत्र दशरथ के लेखों में तिथि सदैव राज्यारोहण से संदर्भित है, अतः यह समीचीन नहीं। अन्य अर्थ- घोषणा 256 राज कर्मचारियों द्वारा दी गयी; 256 बार की गयी; 256 प्रतियों द्वारा की गयी- भी उचित नहीं जान पड़ते।[17] सबसे उपयुक्त अर्थ टॉमस ने सुझाया है जिसके अनुसार अशोक के दौरे पर निकले 256 रात्रि (दिन) बीत चुके थे।[18] केवल लघु शिलालेख की अहरौरा (मिर्जापुर जिला, उत्तर प्रदेश) प्रति में ही इस बात का उल्लेख है कि दौरे का प्रारंभ बुद्ध अस्थियों के चबूतरे पर स्थापित करने से हुआ था।

VI

लघु शिलालेख के अब तक प्राप्त अठारह प्रतियों में से निम्नलिखित में पर्याप्त अथवा पूर्ण समानता है—

1-2. रतनपुरवा (भभुआ जिला, बिहार) और सहसराम (रोहतास जिला, बिहार)।

3-4. गोविमठ और पालकी गुण्डू (रायचूर, कर्नाटक)।

5-6-7. सिद्दापुर, ब्रह्मगिरी और जटिंग रामेश्वर (तीनों चिनाल दुर्ग जिला, कर्नाटक)।

8-9. निट्टूर और उद्देगोलम (दोनों बेलारी जिला, कर्नाटक)।

10-11. एर्रैगुडी और राजुलमण्डगिरि (दोनों कुर्नुल जिला, आन्ध्र प्रदेश)।

12. अहरौरा (मिर्जापुर जिला, उत्तर प्रदेश)।

13. रूपनाथ (जबलपुर जिला, मध्य प्रदेश)।

14. पान्गुररिया (सेहौर जिला, मध्य प्रदेश)।

15. गुजर्रा (दतिया जिला, मध्य प्रदेश)

16. बहापुर (दिल्ली के निकट)।

17. बैराट (जयपुर जिला, राजस्थान)।

18. मास्की (रायचूर जिला, कर्नाटक)।

इन क्षेत्रगत स्थलों के लेखों में पाठ-समानता का कारण निम्नलिखित था—लेख की प्रति मागधी प्राकृत भाषा में पाटलिपुत्र स्थित अशोक के कार्यालय से तैयार कर जहां लेख लिखवाना होता था वहां के कर्मचारियों को भेजते थे। राजाज्ञा से स्थानीय कर्मचारी अधिक से अधिक लोगों को लेख के मंतव्य से अवगत कराने के उद्देश्य से लेख में क्षेत्रीय भाषा के अनुरूप परिवर्तन कर देते थे। इसलिए एक ही क्षेत्र के एक से अधिक स्थलों पर उत्कीर्ण लेखों में भाषागत

समानता और अन्य क्षेत्रों के लेखों से असमानता मिलती है। उल्लेखनीय है कि लघु शिलालेखों की प्राप्त स्थलों में से केवल ब्रह्मगिरी सिद्दापुर, जटिंग रामेश्वर, निट्टूर, उद्देगोलम, ऐर्रेगुडी तथा रजुल मण्डगिरि में दूसरा लघु शिलालेख भी मिला है।

VII

सामान्यतः यह धारणा है कि कलिंग युद्ध में भीषण नरसंहार से उद्विग्न होकर अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। आठवें शिलालेख के अनुसार उसने बुद्ध की ज्ञान स्थली-बोधगया के दर्शन किये। बौद्ध उपासक होने के एक साल तक धर्म-प्रचार में विशेष रुचि नहीं ली। तत्पश्चात संघ से संबद्ध होने के कारण इस क्षेत्र में सक्रिय हुआ। अनुमानतः सक्रियता का प्रारंभ बोधगया के दर्शन से हुआ जो राज्यारोहण के दस वर्ष पश्चात् किया था। इस तरह वर्तमान लेख की तिथि अशोक के राज्यारोहण के बारहवें या तेरहवें वर्ष होनी चाहिए।

VIII

अशोक निश्चित रूप से बौद्ध था। लघु शिलालेख में वह अपने को बौद्ध उपासक कहता है।[20] भाब्रू लेख में बुद्ध, धर्म तथा संघ के प्रति श्रद्धा व्यक्त करता है।[21] लघु स्तंभ लेख[22] में संघ भेदक भिक्षु-भिक्षुणियों को दण्डित करने की घोषणा करता है। आठवें शिलालेख में बोधगया, लुम्बिनी लेख[23] में बुद्ध की जन्मस्थली और निगाली सागर लेख[24] में कनक मुनि बुद्ध के स्तूप के दर्शन की बात कही गयी है। साहित्यिक स्त्रोतों से उसके द्वारा अनेक बौद्ध स्तूपों तथा विहारों का निर्माण कराने का और बौद्ध संघ को प्रभूत मात्रा में दान देने का उल्लेख है।[25] रतनपुरवा और अन्य शिलालेखों को विहार में धर्मोपदेश सुनने वाले बौद्धों को बौद्ध धर्म के संरक्षक अशोक के लेख को भिक्षु प्रसन्नतापूर्वक उद्वाचन करते रहे होंगे। उपासक प्राकृतिक शिला के फर्श पर स्थित होकर इसका श्रवण करते रहे होंगे।

लेख लिखने के लिए चट्टान पर स्थान का चयन बहुत सोच समझ कर किया गया था। आदमी के कद से ऊंचे भाग पर होने और प्राकृतिक शिला के आच्छादन ने लेख को सुरक्षित रहने में सहायता की। सामने प्राकृतिक शिला का फर्श होना भी लोगों को बैठने के लिए सुविधाजनक था। शिला को छेनी से समतल करना लेख के अक्षरों को स्पष्ट अंकित करने में सहायक था। लघु शिलालेख की अठारह प्रतियों में केवल रतनपुरवा तथा रूपनाथ की प्रतियां ही पूर्णतः सुरक्षित हैं। सहसराम प्रति भी प्राकृतिक शिला आच्छादन से पर्याप्त सुरक्षित रही[26] तथापि सात जगहों पर किंचित् क्षतिग्रस्त है। और इसके कुछ अक्षर पूर्णतया स्पष्ट नहीं है जिसके फलस्वरूप विद्वानों के उद्वाचन में किंचित भेद है। रतनपुरवा लेख की उपलब्धि से सहसराम लेख के नष्ट भाग की पुनर्रचना और अस्पष्ट अक्षरों का पाठ किया जा सकता है।

IX

ज्ञान-प्रवाह, वाराणसी की प्रबन्ध न्यासी श्रीमती विमला पोद्दार, निदेशिका प्रो. कमल गिरि तथा आचार्य नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी ने इस लेख के सम्पादन के लिए सभी प्रकार की सुविधाएँ प्रदान कीं और इसके प्रकाशन की व्यवस्था की। इसी संस्था के डॉ. नीरज पाण्डेय तथा श्री चन्द्रनील शर्मा ने विभिन्न प्रकार से सहायता दी और श्री सम्राट चक्रवर्ती ने छायाचित्र तैयार किये। ज्ञान-प्रवाह के इन सभी सदस्यों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

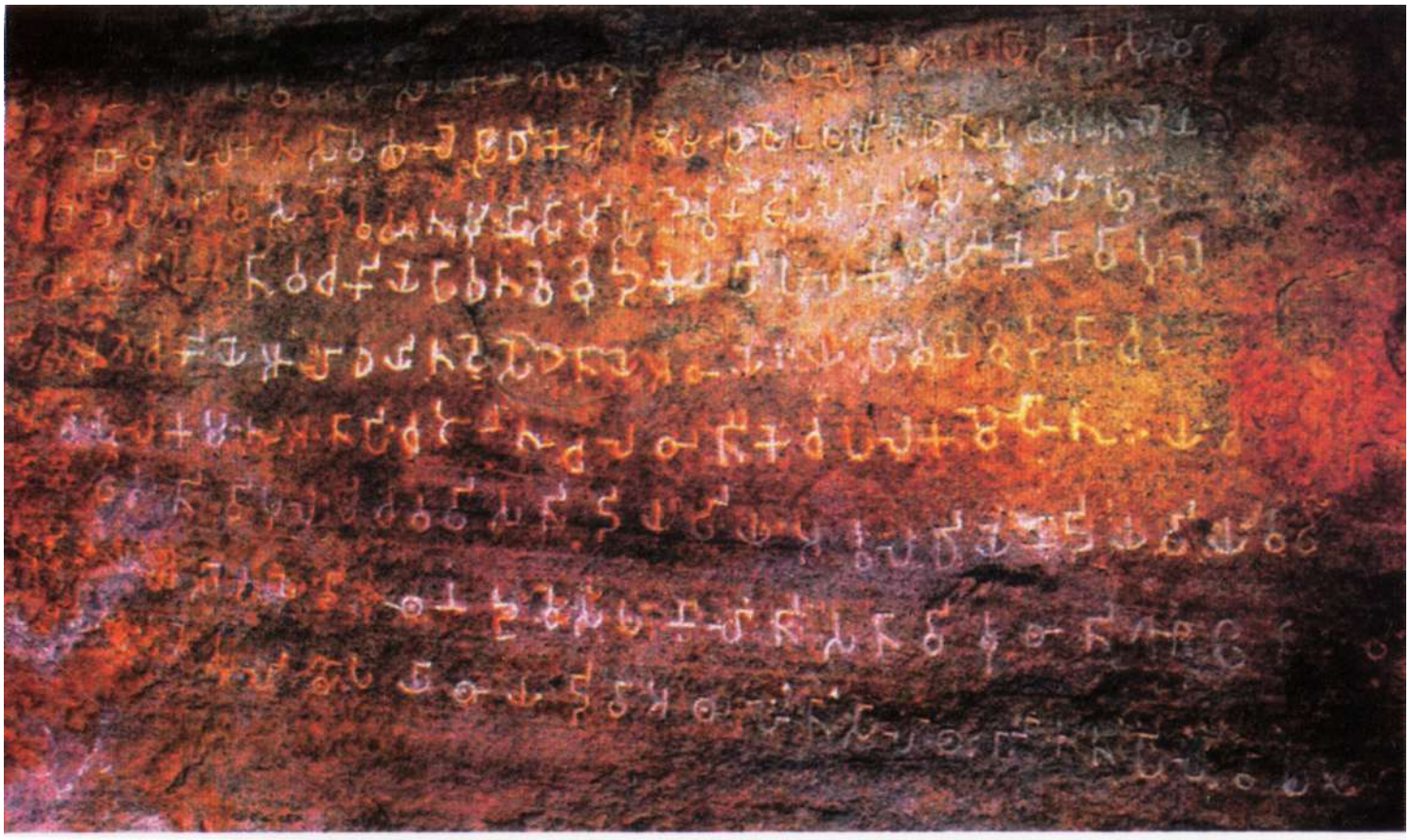

5.1: रतनपुरवा का अशोक कालीन लघु शिलालेख

लेख का देवनागरी रूपान्तर

1. (i) देवानंपिये हेवं आह (ii) अधिकानि अढातियानि सवछलानि अं उपासके सुमि
2. (iii) न चु बाढं पलकंते (iv) सवछले साधिके अं मम संघे उपयीते (v) एतेन च अंतलेन
3. जंबुदीपसि अमिसं देव संत मुनिसा मिसंदेव कटा (vi) पलकमस इयं फले
4. (vii) नो च इयं महतता व चकिये पावतवे खुदकेन पि पलकममीनेना विपुले
5. पि सुअगे चकिये आलाधयितवे (viii) से एताये अठाये इयं सावने खुदका च उडा-
6. ला चा पलकमंतु अंता पि च जानंतु चिलठितीके च पलकमे होतु (ix) इयं च अ-
7. ठे वढिसति विपुलं पि च वढिसति दियढियं अवलधियेना दियढियं वढि-
8. [स] ति (x) इयं च सावने विवुथेन (xi) दुवे सपंनालाति-सता विवुथा ति 200 50 6 (xii) इमं
9. [च अठं] पवतेसु लिखापयाथा (xiii) यदि वा अथि हेता सिलाथंभा ततपि लिखापयाथा ति

अनुवाद

(i) देवनांप्रिय (देवताओं का प्यारा) ऐसा कहता है

(ii) ढाई साल से अधिक समय से मैं [बौद्ध] उपासक रहा हूँ

(iii) [लेकिन मैंने] अधिक पराक्रम नहीं किया

(iv) एक वर्ष से अधिक हुआ कि मैंने संघ से संपर्क स्थापित किया

(v) जो मनुष्य जम्बुद्वीप (भारत) में इस समय तक देवताओं से नहीं जुड़े थे उन्हें देवताओं से जोड़ दिया गया

(vi) यह पराक्रम का ही फल है

(vii) यह केवल महान पद वालों द्वारा ही प्राप्त करना शक्य नहीं है अपितु लघु पद वाले भी पराक्रम करने से विपुल स्वर्ग को प्राप्त कर सकते हैं

(viii) इस प्रयोजन के लिए यह घोषणा की गई है कि छोटे पद वाले और बड़े पद वाले [दोनों ही] पराक्रम करें, सीमावर्ती भी [इसके बारे में] जानें और यह पराक्रम चिरस्थायी हो

(ix) और इस प्रयोजन में वृद्धि होगी, विपुल वृद्धि होगी, डेढ़ गुना, कम से कम डेढ़ गुना वृद्धि होगी

(x) यह घोषणा मैंने यात्रा के दौरान की है

(xi) [इस समय] मुझे यात्रा करते दो सौ छप्पन 200 50 6 (256) रात्रि (अर्थात् दिन) बीत चुके हैं

(xii) इस प्रयोजन को शिलाओं पर लिखवायें

(xiii) यदि यहां (अर्थात् मेरे साम्राज्य में) शिला-स्तम्भ हों तो उन पर भी लिखवायें।

सन्दर्भ

1. सर्वश्री महेन्द्र राजभर, रामशंकर और नरेन्द्र कुशवाहा।
2. किरण कुमार थपल्याल, ए न्यू इंस्क्रिप्शन फ्राम रतनपुरवा, ज्ञान-प्रवाह, वाराणसी, 2009।
3. प्रथम पृथक शिलालेख धौली प्रति, देखिए हुल्ट्स, कार्पस इंस्क्रिप्शन्स इंडिकेरम, जिल्द I, पृ. 97।
4. मागधी भाषा की विशेषताओं के लिए देखिए, देवदत्त रामकृष्ण भण्डारकर, अशोक, पृ. 174।
5. पतञ्जलि के महाभाष्य में देवनानांप्रिय को दीर्घायु तथा आयुष्मान के समान शुभ माना गया है। भट्टोजी दीक्षित लघु-सिद्धान्त कौमुदी में इसे मूर्ख का द्योतक मानते हैं जो संभवतः उनके ब्राह्मणधर्मावलम्बी और बौद्ध विरोधी होने के कारण हो सकता है।
6. मास्की, गुजर्रा, निट्टूर तथा उद्देगोलम लेखों के लिए देखिए क्रमशः दिनेशचन्द्र सरकार, अशोकन स्टडीज, कलकत्ता, 2000 (पुनर्मुद्रण), पृ. 50, 88, 123, 129.
7. शिलालेख आठवां, देखिए हुल्ट्स, पूर्वोक्त, पृ. 14।
8. उपर्युक्त मतों के उल्लेख और समीक्षा के लिए देखिए दिनेश चन्द्र सरकार, उपर्युक्त, पृ. 85।
9. जम्बूद्वीप की परिभाषा के लिए देखिए दिनेश चन्द्र सरकार, उपर्युक्त, पृ. 85।
10. हरप्रसाद शास्त्री, जर्नल एण्ड प्रोसीडिंग्स ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, जिल्द 6, 1910, पृ. 259।
11. एफ. डब्ल्यू टॉमस, कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, जिल्द I, पृ. 505।
12. जे. फिलिओजा, जर्नल एशियाटिक, 1949, पृ. 225।
13. ई. हुल्ट्स, पूर्वोक्त, पृ. XLV।
14. देवदत्त रामकृष्ण भण्डारकर, अशोक, 1955, तृतीय संस्करण, पृ. 140-41, 371-72।
15. यशन्त सिंह नेगी, सम इण्डोलॉजिकल स्टडीज़, जिल्द I, पृ. 112।
16. जे. एफ. फ्लीट, जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, 1910, पृ. 1307।
17. उपर्युक्त सभी मतों के लिए देखिए अवधकिशोर नारायण, भारती, जिल्द 5, पृ. 78।
18. एफ. डब्ल्यू टॉमस का मत, दिनेशचन्द्र सरकार, पूर्वोक्त, पृ. 70 में उद्घृत।
19. देखिए, दिनेश सरकार, पूर्वोक्त, पृ. 81-82।
20. देखिए, लघु शिलालेख, मास्की प्रति (बुध उपासके)।
21. हुल्ट्स, पूर्वोक्त, पृ. 172-174।
22. यह लेख सारनाथ, प्रयाग (पहले कौशाम्बी में) तथा सांची के स्तंभों पर मिलता है। देखिए हुल्ट्स, पूर्वोक्त, पृ. 107।
23. हुल्ट्स, पूर्वोक्त, पृ. 164।
24. हुल्ट्स, पूर्वोक्त, पृ. 165।
25. महावंश, 5, 209।
26. हुल्ट्स, पूर्वोक्त, पृ. XXIV।